



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13

अंक : 11

जुलाई, 2026

मूल्य : ₹2.00

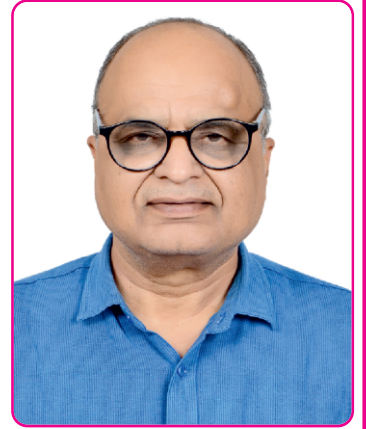


मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

जूनोटिक रोगों के प्रति जागरूकता : सुरक्षित पशुधन और स्वस्थ समाज के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता

मानव, पशु एवं पर्यावरण का स्वास्थ्य एक-दूसरे से परस्पर रूप से जुड़ा हुआ है। पशुओं से मनुष्यों में एवं मनुष्यों से पशुओं में प्राकृतिक रूप से संचारित होने वाले रोगों को जूनोटिक रोग कहा जाता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जूनोटिक रोग मानव स्वास्थ्य, पशुधन उत्पादन एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरे हैं। इन रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जन-जागरूकता एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य समन्वित प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अनेक संक्रामक रोगों का संबंध पशुओं से होता है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संपर्क के माध्यम से मनुष्यों तक पहुंच सकते हैं। पशुधन, वन्यजीव एवं मानव के मध्य बढ़ते संपर्क, पर्यावरणीय परिवर्तन एवं बदलती परिस्थितियों के कारण जूनोटिक रोगों के प्रति सतर्कता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। रेबीज, ब्रुसेल्लोसिस, एन्थ्रेक्स, क्षय रोग (टी.बी.), लेप्टोस्पायरोसिस, एवियन इन्फ्लुएंजा सहित अनेक जूनोटिक रोग पशु एवं मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। इन रोगों की प्रभावी रोकथाम के लिए पशुओं का नियमित टीकाकरण, रोगों की समय पर पहचान, स्वच्छ एवं वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों का पालन, जैव-सुरक्षा उपायों को अपनाना तथा पशु चिकित्सकीय सलाह प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। पशुधन ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आजीविका एवं पोषण सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। स्वस्थ पशु ही स्वस्थ एवं समृद्ध समाज की आधारशिला हैं। अतः पशु स्वास्थ्य संरक्षण, रोग नियंत्रण एवं सुरक्षित पशुपालन पद्धतियों को बढ़ावा देना सभी संबंधित हितधारकों की सामूहिक जिम्मेदारी है। जूनोटिक रोगों के प्रभावी नियंत्रण के लिए "एक स्वास्थ्य" की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य के बीच आपसी संबंधों को ध्यान में रखते हुए रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए समन्वित प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। इस दिशा में पशु चिकित्सकों, चिकित्सा विशेषज्ञों, वैज्ञानिक संस्थानों, प्रशासन एवं आमजन की सहभागिता आवश्यक है। मैं सभी पशुपालकों, पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं आमजन से आह्वान करता हूँ कि वे जूनोटिक रोगों के प्रति जागरूक रहें, पशुओं के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण एवं टीकाकरण को प्राथमिकता दें तथा वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को अपनाएं। समय पर सावधानी एवं सामूहिक प्रयासों के माध्यम से ही पशु एवं मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। आइए, हम सभी मिलकर एक सुरक्षित, स्वस्थ एवं समृद्ध भविष्य के निर्माण में अपना योगदान दें।



डॉ. सुमंत व्यास



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

पशुचिकित्सकों हेतु रोजगार व्यापकता एवं एवियन इन्फ्लुएंजा पर व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 6 जून को आमंत्रित व्याख्यान श्रृंखला के तहत "अत्यधिक रोग जनक एवियन इन्फ्लुएंजा वायरस का महत्व एवं मुकाबला करने की रणनीतियां" तथा "तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में पशुचिकित्सकों की भूमिका, अवसर एवं चुनौतियां विषय पर व्याख्यानो का आयोजन किया गया। प्रो. सुरेश के. मित्तल, पैथोबायोलॉजी विभाग, वेटरनरी मेडिसिन महाविद्यालय, पडर्यू विश्वविद्यालय, (यू.एस.ए.) कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि इस प्रकार के व्याख्यान विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की विषय विशेषज्ञता बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगे तथा प्रख्यात वक्ताओं के अनुभवों को जानने में सहयोगी होंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को विदेश में शिक्षा, शोध, कार्यक्षेत्र एवं रोजगार की संभावनाओं एवं भविष्य के बारे में बताया। प्रो. सुरेश के. मित्तल ने अत्यधिक रोग जनक एवियन इन्फ्लुएंजा वायरस की विश्व में रोगजनकता, इसकी संक्रमणशीलता, बचाव, उपाय तथा पशुओं में इसके टीकाकरण पर विस्तार से बताया तथा वैश्विक पटल में पशुचिकित्सा की भूमिका तथा इसके विभिन्न आयाम एवं चुनौतियों को विस्तार से बताया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को विदेश में शिक्षा एवं शोध हेतु आवश्यक परीक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में कार्यकारी अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. अशोक गौड़ ने किया।



प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाइव प्रसारण में विश्वविद्यालय की भागीदारी

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की "पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना" का लाइव प्रसारण 20 जून को फैकल्टी हाउस में किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास के निर्देशन में आयोजित इस ऑनलाइन कार्यक्रम को विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, संकाय सदस्य, विद्यार्थियों, किसानों एवं पशुपालकों ने देखा और सुना। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि देश का किसान अन्नदाता है अतः यह निधि उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक जरिया है और यह निधि से गरीब किसान को मजबूत करने का प्रयास है। इस अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किसान सम्मान निधि योजना की 23वीं किस्त के तहत 9 करोड़ 44 लाख से अधिक पात्र किसानों को 18,880 करोड़ रुपये की सम्मान राशि का हस्तांतरण कर लाभान्वित किया गया। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के तारकेश्वर से इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। कार्यक्रम के दौरान गांव कतरियासर के 30 किसान उपस्थित रहे। किसानों ने विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों का भ्रमण किया और गतिविधियों को देखा और समझा।



गौ आधारित औषधि की पशु चिकित्सा में भूमिका विषय पर व्याख्यान

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 1 जून को "गौ आधारित औषधि की पशु चिकित्सा में भूमिका" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि हमारी पारम्परिक चिकित्सा पद्धति अत्यन्त सुदृढ़ है एवं वर्तमान समय में नित नई बीमारियों के प्रकोप एवं संक्रामकता को देखते हुए प्राचीन ज्ञान एवं विज्ञान की महत्ता को समझना होगा। उन्होंने कहा की हमें एलोपैथी के साथ-साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के ज्ञान का समावेश करते हुए प्रभावी चिकित्सा पद्धतियों के उपयोग पर बल देना होगा। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विद्यार्थियों को सफलता हेतु निरंतर कर्मशील रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता शंकर लाल जी ने गौ आधारित उपचार पद्धति के दैनिक जीवन में उपयोग एवं लाभ के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया की गाय जनित उत्पाद जैसे गाय का दुग्ध एक सम्पूर्ण आहार के साथ-साथ कई औषधीय गुणों का भंडार है। उन्होंने गाय के घी का पशु चिकित्सा एवं मानव चिकित्सा में प्रयोग, गाय के गोबर एवं गौमूत्र का उर्वरक के रूप में उपयोग एवं कम्प्रेस्ड बायोगैस का ईंधन के रूप में प्रयोग आदि विषयों को विस्तार से बताया। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने पारम्परिक चिकित्सा पद्धति के महत्व पर प्रकाश डाला। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने भारतीय चिकित्सा पद्धति को सहजने एवं वर्तमान परिवेश में उपयोग की प्रासंगिकता पर बल दिया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. अशोक गौड़ ने किया।





‘खेत बचाओ अभियान’ के तहत कतरियासर गाँव में जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीछवाल द्वारा गोद लिये गये गाँव कतरियासर में कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास के निर्देशन में खेत बचाओ अभियान के तहत 12 एवं 30 जून को जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। 30 जून को आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने किसानों को जैविक खाद के अधिक से अधिक उपयोग करने हेतु प्रेरित किया ताकि खेतों में किटनाशकों के अनुचित उपयोग से मनुष्य एवं मृदा पर होने वाले दुष्प्रभावों से बचाव किया जा सके। प्रो. राहुल सिंह पाल, अधिष्ठाता डेयरी महाविद्यालय, बीकानेर ने कहा की माननीय प्रधानमंत्री के विकसित भारत-2047 की कल्पना को साकार करने के लिए किसानों को खुशहाल व समृद्ध बनना होगा। उन्होंने किसानों को प्राकृतिक खेती पद्धतियाँ अपनाने तथा समय-समय खेतों में मृदा परीक्षण करवाने हेतु प्रेरित किया। विषय विशेषज्ञ डॉ. सुशील खारिया, सहायक आचार्य एस.के.आर.ए.यू. बीकानेर ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड की विस्तृत जानकारी दी। कृषि अधिकारी श्रीमती संगीता मेहता कृषि विभाग, बीकानेर किसानों को राज्य सरकार की कृषि योजनाओं की जानकारी प्रदान की। कतरियासर गाँव के सरपंच प्रतिनिधि एवं समाजसेवी श्री सुरजाराम ने खेत बचाओ अभियान के तहत किसानों को जिम्मेदारी से काम करने का अनुरोध किया ताकि खेतों को बचाया जा सके। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुनील कुमार ने किसानों को विषय विशेषज्ञों द्वारा बताई गई जानकारी को आत्मसात करके इससे लाभ लेने हेतु प्रेरित किया। कृषि पर्यवेक्षक श्री धर्मराम, डॉ. रीटा, डॉ. संजय सिंह व डॉ. सोनिया मोर का कार्यक्रम आयोजन में सहयोग रहा। इस कार्यक्रम में 120 महिला एवं पुरुष किसान उपस्थित रहे।



विश्व दुग्ध दिवस का हुआ आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के संघटक डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा “महिला किसानों का अभिनंदन” थीम पर 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस-2026 का आयोजन किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने अपने उद्बोधन में दुग्ध उत्पादन से जुड़े किसानों एवं ग्रामीण महिला दुग्ध उत्पादकों के योगदान की सराहना की। उन्होंने ग्रामीण महिला दुग्ध उत्पादकों के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत के दुग्ध उत्पादन की वास्तविक शक्ति गाँवों की महिलाएं हैं, जो प्रतिदिन पशुओं की देखभाल के साथ-साथ दुग्ध दोहन संबंधी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मुख्य अतिथि डॉ. ए.के. पुनिया, निदेशक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र, बीकानेर ने दुग्ध उत्पादन श्रृंखला का वर्णन करते हुए बताया कि उपभोक्ता तक पहुँचने वाले प्रत्येक दूध के पैकेट के पीछे हजारों दुग्ध उत्पादकों, तकनीकी विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों एवं डेयरी कर्मियों का समर्पण निहित होता है। विशिष्ट अतिथि बाबूलाल बिश्नोई, प्रबंध निदेशक, उरमूल डेयरी, बीकानेर ने डेयरी सहकारिता आंदोलन की उपलब्धियों तथा दुग्ध उत्पादकों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। ओम प्रकाश भांभू, प्लांट मैनेजर, उरमूल डेयरी ने गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन, प्रसंस्करण एवं खाद्य सुरक्षा मानकों के महत्व पर विचार व्यक्त किए। डेयरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. राहुल सिंह पाल ने दुग्ध के पोषण तत्वों तथा राज्य एवं देश में दुग्ध उत्पादन की वस्तु स्थिति पर प्रकाश डाला। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने दूध एवं दूध से जुड़े उत्पादों में शुद्धता एवं मिलावट रहित दुग्ध उत्पादन पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. रीटा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सोनिया मोर द्वारा किया गया।



कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने किया पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) का निरीक्षण

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास जी ने 30 जून को पशु विज्ञान केंद्र, रतनगढ़, चूरू का निरीक्षण किया एवं केंद्र पर होने वाली गतिविधियों की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान उन्होंने केंद्र पर संचालित विभिन्न कार्यों, अनुसंधान गतिविधियों एवं पशुपालन से जुड़े कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से चर्चा की। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने केंद्र के आधारभूत ढांचे, साफ-सफाई व्यवस्था और उसके बेहतर रखरखाव की सराहना करते हुए उन्होंने पर्यावरण संरक्षण एवं हरित विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र परिसर में नीम के अधिकाधिक पौधे लगाने पर विशेष जोर दिया। साथ ही पशु विज्ञान केंद्र में तकनीकी उन्नयन एवं आधुनिक सुविधाओं के विस्तार के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी प्रदान किए।



गाँव बम्बलू में खेत बचाओ अभियान

विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गाँव बम्बलू के अटल सेवा केन्द्र में 9, 16 एवं 19 जून को खेत बचाओ अभियान के अंतर्गत जैविक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। अधिष्ठाता, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने बताया की इन शिविरों का उद्देश्य किसानों को रासायनिक उर्वरकों रहित जैविक खेती के लाभ से अवगत करवाना रहा। 16 जून को आयोजित शिविर में कार्यवाहक यू.एस.आर. संयोजक डॉ. प्रवीण बानो ने किसानों को जैविक खेती के महत्व को विस्तार से बताते हुए कहा की रासायनिक पदार्थों का अत्यधिक प्रयोग मिट्टी की प्राकृतिक संरचना को नुकसान पहुंचा सकता है और उन्होंने जैविक खेती से होने वाले लाभों की भी जानकारी दी। इस शिविर आयोजन में हेतराम कूकणा, मनोज कुमार एवं अन्य ग्रामवासियों का सहयोग रहा।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 5, 6 एवं 12 जून को गांव पालीवाला, श्रीगंगानगर एवं लालगढ़ में तथा 15 एवं 20 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 178 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 13 एवं 20 जून को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय तथा 14, 25 एवं 30 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 18 एवं 23 जून को गांव गंडेरो की ढाणी एवं बेरू गांवों में तथा 20 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 54 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 12 जून को गांव थूर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 23 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8 एवं 15 जून को गांव हाथी एवं मसानिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 5, 18 एवं 30 जून को गांव रामपुरा, भरठवाड़ा एवं गोल में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 105 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 11, 12, 15, 18, 20, 22, 23, 25 एवं 27 जून को गांव पारेवड़ा, देपालसर, साडासर, घाघड़ावास, सांडवा, सादाउ, घेउ, केउ, कालवास, साहवा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 224 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजूंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजूंदा द्वारा 13, 17, 18, 25, 26 एवं 30 जून को गांव मांगरोल बराडा, करपाराम जी की खेडी, रिटोला, बोजूंदा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 143 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 9, 10 एवं 16 जून को गांव सिमल, जोरकिया, एवं वोपारी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 45 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 16 एवं 23-24 जून को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 74 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सफलता की कहानी

खेती के साथ-साथ पशुपालन करके सुंदर देवी बनी प्रेरणास्त्रोत

राजस्थान के चूरू जिले की सरदारशहर तहसील के गांव ढाणी पांचेरा की श्रीमती सुंदरदेवी ने अपनी मेहनत, लगन दूरदर्शिता एवं वैज्ञानिक सोच के बल पर कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में एक प्रेरणादायक पहचान स्थापित की है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि पारंपरिक पशुपालन को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों के साथ अपनाया जाये तो यह न केवल परिवार की आजीविका का सशक्त आधार बनता है बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता का प्रभावी माध्यम भी बन सकता है। सुंदर देवी के परिवार के पास पर्याप्त कृषि भूमि है जहां खेती और पशुपालन को एकीकृत मॉडल के रूप में अपनाया गया है, उनके पति दूसरे राज्य में सरकारी सेवा में उच्च पद पर कार्यरत थे फिर भी परिवार ने अपनी पैतृक कृषि एवं पशुपालन की परंपरा को कभी नहीं छोड़ा। पति के बाहर रहने के दौरान सुंदर देवी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ खेती एवं पशुपालन की जिम्मेदारी संभाली और अपने परिश्रम से नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया। उन्होंने प्रारम्भ से ही उच्च नस्ल की मुरा भैंसों के पालन को अपनाया तथा बेहतर नस्ल के चयन, नस्ल सुधार और वैज्ञानिक प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया। वर्तमान में इनके पास 10 उच्च नस्ल की दुधारू मुरा भैंसे तथा 5 मुरा भैंस के बछड़े हैं। पशुओं के संतुलित पोषण, स्वच्छ प्रबंधन एवं नियमित स्वास्थ्य देखभाल के कारण उनके पशुधन की उत्पादकता निरंतर बढ़ी है। सुंदर देवी अपने पशुपालन व्यवसाय को आधुनिक एवं लाभकारी बनाने के लिए समय-समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) तथा पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों से तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करती रहती है। विशेषज्ञों के मार्गदर्शन से उन्होंने टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं एवं उनके उचित उपयोग, संतुलित पशु आहार एवं आहार प्रबंधन, कृत्रिम गर्भाधान, पशु आहार में खनिज मिश्रण के महत्व तथा वैज्ञानिक पशु स्वास्थ्य प्रबंधन जैसी तकनीकों को अपने पशुपालन में सफलतापूर्वक अपनाया है। इन तकनीकों के उपयोग से पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर हुआ, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई तथा पशुपालन अधिक लाभकारी बना। गुणवत्ता, विश्वास और ईमानदार व्यवहार के कारण उन्होंने पशुपालन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है तथा दूध, शुद्ध देशी घी तथा उच्च गुणवत्ता वाली मुरा भैंसों के विक्रय से वे प्रतिवर्ष लगभग 8-10 लाख रु. की आय अर्जित करती है। कृषि एवं पशुपालन के समन्वित मॉडल के माध्यम से वे खेत में उत्पादित हरे व सूखे चारे का उपयोग पशुओं के लिए करती हैं, जबकि पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग जैविक खाद के रूप में खेतों की उर्वरता बढ़ाने में किया जाता है। सुंदर देवी का मानना है कि पशुपालन केवल एक व्यवसाय नहीं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम है। आज सुंदर देवी चूरू जिले की एक प्रगतिशील महिला पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं। उनकी सफलता की कहानी ग्रामीण महिलाओं, युवाओं एवं पशुपालकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। उनका जीवन इस बात का सशक्त उदाहरण है कि कठिन परिश्रम, वैज्ञानिक सोच, निरंतर सीखने की ललक और आत्मविश्वास के बल पर ग्रामीण महिलाएं न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर सकती हैं बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन की अग्रदूत भी बन सकती हैं।



सम्पर्क: सुंदर देवी

ढाणी पांचेरा, तहसील सरदारशहर, चूरू (मो. : 9511551062)



गर्मियों में ऊँट का आहार और स्वास्थ्य प्रबंधन

ऊँट को भले ही रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है और यह भीषण गर्मी व पानी की कमी को सहने में माहिर होता है लेकिन गर्मियों के मौसम में इनसे लगातार काम लेने (जैसे खेत की जुताई या बोझा ढोना) से इनके शरीर पर भी भारी असर पड़ता है। अगर गर्मियों में ऊँट का खानपान और रख-रखाव का सही ध्यान न रखा जाए तो वे कमजोर हो सकते हैं, लू का शिकार हो सकते हैं और उनकी कार्यक्षमता घट सकती है।

गर्मियों के मौसम में ऊँट को स्वस्थ बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक और देशी उपाय:

पानी की व्यवस्था: यह सच है कि ऊँट कई दिनों तक बिना पानी पिए रह सकता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम उन्हें पानी न दें। गर्मियों में पसीना निकलने और काम के बोझ के कारण शरीर में पानी की कमी हो सकती है। ऊँट को दिन में कम से कम दो बार (सुबह और शाम) साफ और ताजा पानी जरूर पिलाएं। एक स्वस्थ ऊँट गर्मियों में एक बार में 40–80 लीटर तक पानी पी सकता है। गर्मी के मौसम में सप्ताह में 2–3 बार पानी में 50–100 ग्राम साधारण नमक या काला नमक मिलाकर पिलाएं इससे लू नहीं लगती और शरीर में ऊर्जा बनी रहती है।

हरा और सूखा चारा: गर्मियों में सूखे चारे के साथ-साथ हरे चारे की बहुत जरूरत होती है, क्योंकि हरे चारे से ऊँट को प्राकृतिक रूप से पानी और जरूरी विटामिन मिलते हैं।

❖ **पेड़ों की पत्तियाँ:** ऊँट को खेजड़ी (लूम), नीम, बबूल (कीकर), बेर (पाला) और शीशम की पत्तियाँ बहुत पसंद होती हैं। नीम की पत्तियाँ खिलाने से खून साफ रहता है और चमड़ी की बीमारियाँ नहीं होती।

❖ **सूखा चारा:** चने का भूसा (खाखला), ग्वार का फालचा, मूंग या मोठ का चारा ऊँट के लिए बेहतरीन सूखा चारा है। एक वयस्क ऊँट को दिन भर में लगभग 10–15 किलो सूखे चारे की जरूरत होती है।

दाना मिश्रण और काम की ऊर्जा: जो ऊँट रोजाना खेतों में भारी काम करते हैं या छकड़ा (गाड़ी) खींचते हैं उन्हें सिर्फ चारे से पूरी ताकत नहीं मिल पाती।

क्या-क्या मिलाएं: जौ, चना, बाजरा और ग्वार को दरदरा पीसकर ऊँट को खिलाएं।

खिलाने का तरीका: गर्मियों में दाने को खिलाने से 5–6 घंटे पहले पानी में भिगो दें। भीगा हुआ दाना पेट में गर्मी नहीं करता और आसानी से पच जाता है। रोजाना 2–3 किलो दाना मिश्रण पर्याप्त है।

खनिज मिश्रण और नमक: ऊँट के दाने में रोजाना 30–50 ग्राम अच्छी कम्पनी का मिनरल मिक्सचर मिलाएं। ऊँट की चरनी (खुरली) में सेधा नमक का बड़ा ढेला रख दें, जिसे वह अपनी जरूरत के हिसाब से चाटता रहेगा।

फिटकरी का उपयोग: 15–20 दिन में एक बार थोड़ी सी फिटकरी



(लगभग 20–30 ग्राम) पीसकर दाने में देने से पेट के कीड़े मरते हैं और पाचन दुरुस्त रहता है।

लू से बचाने के असरदार देशी नुस्खे:

प्याज का इस्तेमाल: तेज गर्मी में ऊँट को लू से बचाने के लिए 250–500 ग्राम प्याज को कूटकर पानी या गुड़ के साथ हफ्ते में एक-दो बार जरूर खिलाएं। यह लू के खिलाफ ढाल का काम करता है।

जौ का सत्तु: जौ की तासीर ठंडी होती है। ज्यादा काम करने वाले ऊँटों को जौ का आटा (सत्तु) पानी में घोलकर पिलाने से उनके शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है।

गर्मियों की मुख्य बीमारियाँ और बचाव (सर्रा व खुजली) गर्मी और बारिश के मौसम में मक्खी-मच्छर बहुत बढ़ जाते हैं जो जानलेवा बीमारियाँ फैलाते हैं।

सर्रा रोग (तीबरसा): यह ऊँटों की सबसे खतरनाक बीमारी है जो खून चूसने वाली मक्खियों से फैलती है। इसमें ऊँट को रुक-रुक कर बुखार आता है, वह गोल-गोल घूमने लगता है और सूखकर कमजोर हो जाता है, इससे बचाव के लिए ऊँट के बाड़े में धुआँ करें और मक्खियों को दूर रखने वाली दवाईयों का छिड़काव करें।

खुजली: पसीने और धूल के कारण ऊँट की चमड़ी पर खुजली हो जाती है और बाल झड़ने लगते हैं। इसके लिए पशुचिकित्सक की सलाह से “आइवरमेक्टिन” का इंजेक्शन जरूर लगावाएं।

ग्याभिन ऊँटनी और बच्चो (टोरडी/बोता) की खास देखभाल गर्मियों में ग्याभिन ऊँटनी को चिलचिलाती धूप से बचाएं छोटे बच्चो (टोरडी) को तेज धूप में न बांधें, उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होती है वे जल्दी लू का शिकार हो सकते हैं।

काम लेने का सही शेड्यूल (श्रम प्रबंधन)

दोपहर का आराम: सुबह 5 बजे से 11 बजे तक काम लें! छोपहर 12 बजे से साय: 4 बजे तक (जब धूप सबसे तेज हो) ऊँट से कोई भारी काम न लें। उसक किसी बड़े पेड़ (जैसे खेजड़ी या नीम) की घनी छाया या हवादार छप्पर के नीचे बांधें।

नहलाना: ज्यादा उमस होने पर हफ्ते में एक या दो बार ऊँट को साफ पानी से जरूर नहलाएं।

डॉ. गगन चावला

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल



पशुओं में लेप्टोस्पायरोसिस: एक महत्वपूर्ण जूनोटिक जीवाणु जनित रोग

लेप्टोस्पायरोसिस एक महत्वपूर्ण जीवाणुजनित जूनोटिक रोग है, जो मनुष्यों के साथ-साथ अधिकांश स्तनधारी पशुओं को प्रभावित करता है। यह रोग घरेलू एवं जंगली दोनों प्रकार के पशुओं में पाया जाता है और पशुपालन के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में विशाल एवं विविध पशुधन तथा पशुओं और किसानों के बीच संपर्क इस रोग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक व्यावसायिक रोग है, क्योंकि यह मुख्यतः पशुपालन, कृषि एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों में अधिक देखा जाता है। लेप्टोस्पायरोसिस वर्ष भर हो सकता है किन्तु इसकी संभावनाएं वर्षा ऋतु में अधिक होती है। इस रोग का मुख्य कारक लेप्टोस्पायरा जीवाणु जलभराव, नम वातावरण तथा हल्की क्षारीय मिट्टी एवं पानी में लम्बे समय तक जीवित रह सकता है।

रोग का संक्रमण : लेप्टोस्पायरोसिस एक संक्रामक जीवाणुजनित जूनोटिक रोग है, जो मुख्यतः लेप्टोस्पायरा जीवाणु के संपर्क में आने से फैलता है। यह जीवाणु संक्रमित पशुओं के मूत्र, दूषित जल, मिट्टी तथा संक्रमित ऊतकों के माध्यम से स्वस्थ पशुओं में प्रवेश करता है। संक्रमण के प्रमुख मार्ग निम्नलिखित हैं:

- ❖ संक्रमित मूत्र या दूषित जल के प्रत्यक्ष संपर्क से।
- ❖ संक्रमित पशुओं के काटने अथवा त्वचा पर घाव के माध्यम से।
- ❖ संक्रमित ऊतको एवं आंतरिक अंगों के सेवन से।
- ❖ संक्रमित माता से नवजात पशु में संक्रमण।

लेप्टोस्पायरोसिस के पशुओं में प्रमुख प्रजनन एवं दुग्ध संबंधी लक्षण

गर्भपात: संक्रमित गर्भवती पशुओं में गर्भावस्था के किसी भी चरण में विशेषकर अंतिम तिमाही के दौरान गर्भपात हो सकता है। यह लेप्टोस्पायरा जीवाणु द्वारा भ्रूण एवं अपरा को क्षति पहुंचाने के कारण होता है।

मृत शिशु का जन्म: संक्रमण की गंभीर अवस्था में भ्रूण गर्भाशय के भीतर ही मर सकता है जिसके परिणामस्वरूप मृत बछड़े, मेमने, पिगलेट अथवा अन्य नवजात शिशुओं का जन्म होता है। कमजोर एवं अल्पजीवी शिशुओं का जन्म हो सकता है। बांझपन या प्रजनन क्षमता में कमी हो जाती है।

दूध के रंग में परिवर्तन: दुधारु पशुओं में संक्रमण के दौरान दूध में रक्त की अल्प मात्रा मिल जाने से उसका रंग हल्का लाल

अथवा गुलाबी दिखाई दे सकता है। इसके साथ ही दूध उत्पादन में अचानक कमी तथा दूध की गुणवत्ता में गिरावट भी देखी जाती है।

गर्भधारण के बाद पुनः हीट में आ जाना : यदि प्रारम्भिक गर्भावस्था के दौरान भ्रूण की मृत्यु या प्रारम्भिक भ्रूण अवशोषण हो जाए तो गाय पुनः हीट में आ जाती हैं। यह लेप्टोस्पायरोसिस का एक महत्वपूर्ण प्रजनन संबंधी लक्षण माना जाता है और इससे गर्भधारण की दर प्रभावित होती है।

पशुओं में लेप्टोस्पायरोसिस की रोकथाम:

❖ **चूहों का नियंत्रण:** चूहें लेप्टोस्पायरा जीवाणु के प्रमुख रिजर्वायर होस्ट होते हैं। ये मूत्र के माध्यम से जीवाणु को वातावरण में फैलाते हैं जिससे जल, चारा एवं पशुशाला दूषित हो जाते हैं। पशुशाला एवं चारा भण्डारण स्थलों को चूहों से मुक्त रखें, चूहों के बिलो एवं छिपने के स्थानों को नष्ट करें, आवश्यकतानुसार सुरक्षित रॉडन्टसाइड तथा चूहे फंदों का उपयोग करें, पशु आहार एवं पानी को ऐसे स्थान पर रखें जहां चूहे न हो, पशुशाला की नियमित सफाई एवं स्वच्छता बनाएं रखें ताकि चूहों के रहने और प्रजनन की संभावना कम हो।

❖ **टीकाकरण:** लेप्टोस्पायरोसिस की रोकथाम का सबसे प्रभावी उपाय नियमित टीकाकरण है। श्वान, गाय, भैंस, भेड़ बकरी जैसे पालतू एवं फार्म पशुओं का समय-समय पर टीकाकरण किया जाना चाहिए। टीकाकरण से संक्रमण की संभावना, रोग की गंभीरता तथा जीवाणुओं के उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आती है। श्वानों में लेप्टोस्पायरा का नियमित टीकाकरण किया जाता है। यदि किसी पशु को पहले लेप्टोस्पायरोसिस हो चुका हो, तब भी उसका टीकाकरण करना आवश्यक है, क्योंकि इससे अन्य सीरोवारों के विरुद्ध सुरक्षा विकसित होती है तथा भविष्य में होने वाला संक्रमण अपेक्षाकृत कम गंभीर होता है।

❖ **पशुधन प्रबंधन:** चूंकि यह एक पशुजन्य रोग है अतः पशुओं के फार्म में लेप्टोस्पायरोसिस की रोकथाम के लिए टीकाकरण के साथ-साथ उचित प्रबंधन पद्धतियों का पालन करना भी अत्यंत आवश्यक है। साथ ही स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल उपलब्ध करना, चूहा नियंत्रण कार्यक्रम, विभिन्न पशु प्रजातियों को एक साथ चराने से बचाना, नए पशुओं को सीधे झुंड में शामिल न करना एवं प्रजनन हेतु साझा नर पशुओं का उपयोग न करना भी आवश्यक है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



बकरी का दूध: स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का अमूल्य उपहार

बकरी का दूध प्राचीन काल से ही पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक आहार के रूप में जाना जाता है। वर्तमान समय में भी इसकी उपयोगिता को देखते हुए लोग इसके सेवन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। बकरी के दूध में प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, मैग्नीशियम, आयरन, कॉपर, जिंक तथा सेलेनियम जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाए जाते हैं। एक लीटर बकरी के दूध में लगभग 38 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है, जो शरीर की मांसपेशियों, त्वचा, बाल, रक्त तथा अन्य ऊतकों के निर्माण और मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही कारण है कि बीमारी के बाद शरीर की रिकवरी तथा बच्चों की वृद्धि और विकास के लिए इसे उपयोगी माना जाता है। बकरी के दूध की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी आसान पाचन क्षमता है। इसके वसा कण (फैट ग्लोब्यूलस) गाय और भैंस के दूध की तुलना में छोटे होते हैं, जिसके कारण यह पेट में जल्दी टूटकर पच जाता है। इससे पेट पर कम दबाव पड़ता है और गैस, अपच तथा भारीपन जैसी समस्याएँ कुछ लोगों में कम देखने को मिलती हैं। यही वजह है कि बच्चों, बुजुर्गों तथा कमजोर पाचन शक्ति वाले व्यक्तियों के लिए बकरी का दूध विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है। बकरी के दूध में अधिकांशतः ए2 प्रकार का बीटा-केसिन प्रोटीन पाया जाता है जो कुछ लोगों को अन्य दूधों की तुलना में अधिक अनुकूल लगता है। इसके अतिरिक्त इसमें लैक्टोज की मात्रा भी थोड़ी कम होती है, जिससे हल्की लैक्टोज संवेदनशीलता वाले व्यक्तियों को इसे पचाने में अपेक्षाकृत आसानी हो सकती है। यही गुण बकरी के दूध को अन्य दूधों से अलग पहचान प्रदान करते हैं। डेंगू जैसी बीमारी के दौरान शरीर अत्यधिक कमजोर हो जाता है और रोगी को पर्याप्त पोषण की आवश्यकता होती है। बकरी का दूध प्रोटीन, कैल्शियम, खनिज तथा ऊर्जा का अच्छा स्रोत है, इसलिए इसे डेंगू के दौरान लाभकारी माना जाता है। इसमें पाया जाने वाला सेलेनियम शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सहयोग देता है तथा कोशिकाओं को क्षति से बचाने में मदद करता है। हालांकि यह स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है कि बकरी का दूध डेंगू का इलाज नहीं है और प्लेटलेट्स बढ़ाने के दावे को अभी तक वैज्ञानिक रूप से पूरी तरह सिद्ध नहीं किया गया है। इसका वास्तविक लाभ रोगी को आवश्यक पोषण और ऊर्जा प्रदान करना है। बकरी के दूध में पाया जाने वाला सेलेनियम एक महत्वपूर्ण खनिज है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में सहायता करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट की तरह कार्य करता है और कोशिकाओं को हानिकारक तत्वों से बचाता है। साथ ही यह थायरोयड ग्रंथि के सामान्य कार्य में भी सहायक माना जाता है। इसके अतिरिक्त बकरी के दूध में कैल्शियम और फॉस्फोरस की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है, जो हड्डियों और दाँतों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कैल्शियम मांसपेशियों के सामान्य कार्य में सहायता करता है जबकि फॉस्फोरस शरीर में ऊर्जा उत्पादन तथा हड्डियों की मजबूती में योगदान देता है। एनीमिया अर्थात् खून की कमी की समस्या में भी बकरी का दूध सहायक माना जाता है। इसमें आयरन, कॉपर तथा अन्य खनिज पाए जाते हैं जो शरीर में रक्त निर्माण की प्रक्रिया को सहयोग दे सकते हैं। आयरन हीमोग्लोबिन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जबकि कॉपर शरीर में आयरन के बेहतर उपयोग में सहायता करता है। हालांकि गंभीर एनीमिया के उपचार के लिए



चिकित्सकीय सलाह और आयरन युक्त संतुलित आहार आवश्यक होता है। जोड़ों के दर्द और गठिया से पीड़ित लोगों के लिए भी बकरी का दूध उपयोगी माना जाता है। इसमें मौजूद कैल्शियम, फॉस्फोरस और प्रोटीन हड्डियों तथा मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करते हैं। नियमित सेवन से शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं, जिससे जोड़ों के स्वास्थ्य को सहयोग मिल सकता है। हालांकि गठिया, जोड़ों की सूजन या दर्द जैसी समस्याओं का उपचार केवल बकरी के दूध से संभव नहीं है और इसके लिए चिकित्सकीय परामर्श आवश्यक होता है। मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बकरी का दूध लाभदायक माना जाता है। मस्तिष्क को सही ढंग से कार्य करने के लिए प्रोटीन, खनिज और अन्य पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। बकरी का दूध इन आवश्यक तत्वों की पूर्ति करता है, जिससे शरीर में ऊर्जा बनी रहती है, थकान कम हो सकती है तथा एकाग्रता में सुधार आ सकता है। हालांकि यह अवसाद, चिंता या अन्य मानसिक रोगों का उपचार नहीं है, लेकिन संतुलित पोषण के माध्यम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में सहायता कर सकता है। बकरी के दूध में मैग्नीशियम, पोटेशियम, जिंक, आयरन, कॉपर और सेलेनियम जैसे कई आवश्यक खनिज पाए जाते हैं। मैग्नीशियम नसों और मांसपेशियों के कार्य में सहायता करता है, पोटेशियम रक्तचाप को नियंत्रित रखने में मदद करता है, जिंक घाव भरने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है, जबकि आयरन और कॉपर रक्त निर्माण में योगदान देते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें पाए जाने वाले मध्यम श्रृंखला वाले फैटी एसिड शरीर को शीघ्र ऊर्जा प्रदान करते हैं और अपेक्षाकृत आसानी से पच जाते हैं।

निष्कर्ष: बकरी का दूध एक अत्यंत पौष्टिक प्राकृतिक आहार है, जो प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, मैग्नीशियम, आयरन, कॉपर, जिंक और सेलेनियम जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका आसानी से पच जाना है। यह शरीर को ऊर्जा, पोषण और आवश्यक खनिज प्रदान करता है तथा हड्डियों, मांसपेशियों और सामान्य स्वास्थ्य को सहयोग देता है। यद्यपि यह किसी बीमारी का चमत्कारी उपचार नहीं है, फिर भी संतुलित आहार के रूप में इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है।

डॉ. संदीप कुमार एवं डॉ. विनय कुमार
पीएचडी स्कॉलर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



वर्षा ऋतु में सुरक्षित एवं स्वस्थ पशुधन के लिए आवश्यक सावधानियां

वर्षा ऋतु का आगमन पशुओं के स्वास्थ्य एवं देखभाल की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवधि होती है। इस मौसम में वातावरण में नमी, तापमान में उतार-चढ़ाव, जलभराव एवं चारे की गुणवत्ता में परिवर्तन के कारण पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों, परजीवी संक्रमण एवं पोषण संबंधी समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है। वैज्ञानिक प्रबंधन एवं समय पर सावधानियां अपनाकर इन समस्याओं को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। वर्षा ऋतु के दौरान पशुओं में खुरपका-मुंहपका, गलघोंटू, लंगड़ा बुखार, थनैला रोग, कृमि संक्रमण एवं त्वचा संबंधी रोगों का खतरा बढ़ सकता है। इसके अतिरिक्त अधिक नमी वाले वातावरण में जीवाणु एवं परजीवी संक्रमण तेजी से फैल सकते हैं। इसलिए पशुओं का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, समय पर टीकाकरण एवं कृमिनाशक उपचार पशु स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। वर्षा ऋतु के दौरान पशुओं को स्वच्छ, सूखे एवं हवादार स्थान पर रखें। पशु आवास में जलभराव एवं कीचड़ की स्थिति उत्पन्न न होने दें तथा उचित जल निकासी एवं साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करें। गीले फर्श पर लंबे समय तक रहने से पशुओं में खुर संबंधी समस्याएं एवं संक्रमण की संभावना बढ़ सकती है। इस मौसम में पशुओं के आहार एवं पेयजल की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। वर्षा के समय चारे में नमी अधिक होने के कारण उसमें फफूंद लगने की संभावना रहती है, जिससे पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। पशुओं को स्वच्छ, सुरक्षित एवं पौष्टिक चारा उपलब्ध कराएं तथा संतुलित आहार, खनिज मिश्रण एवं आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति सुनिश्चित करें। वर्षा ऋतु में मच्छर, मक्खी एवं अन्य बाह्य परजीवियों की संख्या बढ़ जाती है, जो विभिन्न रोगों के प्रसार का कारण बन सकते हैं। अतः पशुशाला एवं आसपास के क्षेत्र की नियमित सफाई करें, अनावश्यक जलभराव को रोकें तथा जैव-सुरक्षा उपायों का पालन करें। किसी भी पशु में भूख कम होना, बुखार, दूध उत्पादन में कमी, सुस्ती, दस्त, खांसी, लंगड़ापन या अन्य असामान्य लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें। वर्षा ऋतु में उचित प्रबंधन एवं समय पर सावधानियां अपनाकर पशुओं को स्वस्थ रखा जा सकता है, जिससे पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ पशुपालकों की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया जा सकता है। मैं सभी पशुपालक भाइयों एवं बहनों से अपील करता हूँ कि वे पशुओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, नियमित टीकाकरण एवं वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को अपनाएं तथा स्वस्थ एवं उत्पादक पशुधन के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी

केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी

प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

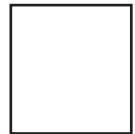
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया